परमजीत कौर 'रीत'

जन्मतिथि- 15.11.1975
जन्मस्थान - श्री मुक्तसर साहिब
पिता का नाम- श्री हरनेक सिंह
माता का नाम- स्व. श्रीमती मनजीत कौर
मोबाइल नम्बर - 9460395688

पथ के कंटक भूलकर, बढ़ते जाओ मीत |
आने वाला हर दिवस, दे जाएगा जीत ||
दे जाएगा जीत,काल की बोली कहती |
प्रतिपल दे संकेत, हमें चेताती रहती |
मिले नहीं नवनीत, 'रीत' पानी को मथ के |
करते रहना कर्म, भूलकर कंटक पथ के ||

****

आहट फागुन की हुई, मीठी हुई बयार |
रंगों भरी उमंग में, बहक रहा संसार ||
बहक रहा संसार, पहन मस्ती का बाना |
बरसें रंग अबीर, फाग ज्यूँ खेले कान्हा |
पा रंगो का साथ, भरें रिश्ते गर्माहट |
लिये मधुरता 'रीत', हुई फागुन की आहट ||

****

जब तक अंतिम साँस है, तूफानों से रार |
जलता दीपक कह रहा, नहीं माननी हार ||
नही माननी हार, मुझे जलते जाना है |
अपना तनिक उजास, जगत में बिखराना है |
लौ बढ़ जाये और, आखिरी जब हो दस्तक |
कुछ कर ले तूफ़ान, लड़ूँगा साँसे जब तक ||

****

बनते हैं आदर्श जब, दुनिया में कुछ लोग |
रचते हैं इतिहास को, संकल्पों के योग ||
संकल्पों के योग, अटल-पथ बढ़ते जाते |
बाधायें हो लाख, कहाँ कब वे घबराते |
कहती 'रीत' यथार्थ, संकटों में हैं छनते |
लोग वही आदर्श, उद्धरण जग में बनते ||

****

सरिता बहती जा रही, बाधाओं को चीर |
अपनी राहें ढूँढकर, आगे बढ़ता नीर ||
आगे बढ़ता नीर, और पत्थर घिस देता |
बह निकले जो संग, साथ उसको ले लेता |
सरिता जीवन-दर्श, लगे ज्यों कविता कहती |
बढ़ हर बाधा चीर, कह रही सरिता बहती ||

****

कितनी प्यारी सी लगें, बिटिया चिड़िया धूप |
रोशन करतीं चहककर, आँगन का हर रूप ||
आँगन का हर रूप, बदल ही इनसे जाता |
इनके आते गेह, एक रौनक सी पाता |
करतीं नभ पर राज, बात ये इनकी न्यारी |
बिटिया चिड़िया धूप,तभी तो कितनी प्यारी।।

****

साँकल तेरे पाँव में, दूर बहुत आकाश |
अरी! चिड़कली किन्तु तूँ, होना नहीं निराश ||
होना नहीं निराश, पंख फैलाती रहना |
एक न इक दिन टूट, गिरेंगे बंधन, है ना?
पलट समय के साथ,कहें क्या कौन यहाँ कल।
बन जाये औजार, पाँव की जो है साँकल ||

****

दुनिया हाँडी में भरा, माया का नवनीत |
जुगत लगायें इंद्रियाँ, भोग लगे नित, मीत ||
भोग लगे नित, मीत, व्यर्थ की भागा-दौड़ी |
जीवन जाता बीत, जोड़कर कौड़ी-कौड़ी |
शेष विरासत 'रीत', सँभालें मुन्ना-मुनिया |
चलता रहता चक्र, घूमती हाँडी दुनिया ||

****

होती है उसकी विजय, लेता जो संकल्प |
श्रम से प्रतिउत्तर करे, व्यर्थ न करता जल्प ||
व्यर्थ न करता जल्प, विज्ञ हो या हो साक्षर |
परबत पर जो लीक, खींच करता हस्ताक्षर |
अपने बल जो 'रीत', निकाले नग या मोती |
करता रहे प्रयास, विजय है उसकी होती ||

****

कुदरत हमको जाँचती, कठिनाई में डाल |
संयम धीरज नम्रता, देते हमें निकाल ||
देते हमें निकाल, परीक्षा की घड़ियों से |
उचित कर्म की राह,मिलाती शुभ-कड़ियों से |
कहती 'रीत'यथार्थ,सफलता की यह कसरत|
करवाती है मित्र, हमेशा सबको कुदरत ||

****